प्राक्कथन

साहित्य समाज का दर्पण है, समाज का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है। इस साहित्य के अन्दर डूबने से ही हम उस बहुमूल्य मोती को पा सकते हैं। वह मोती है जीवन मूल्य और जीवन तत्व। ऐसे एक सामाजिक साहित्यकार है रमेशचन्द्र शाह, इसीलिए उन्हें 2014 में साहित्य आकादमी पुरस्कार मिला था। शाह जी के हर उपन्यास में समाज, परिवार, धर्म और राजनीति से संबन्धित विषय मिलते हैं।

उनके उपन्यासों पढ़ने के बाद मुझे यह विचार आया कि आज हमारे देश में परिवार, व्यक्ति और साहित्य का कितना घनिष्ट संबंध है, और इसका कितना महत्व है। मैं रमेशचन्द्र शाह जी से बहुत प्रभावित हुई। शाह जी ने आधुनिक काल के समस्त विषयों के बारे में चर्चा की है और विदेशी जीवन की विसंगतियों को भी अपनी रचनाओं में समेटने का प्रयास किया है। इसका प्रभाव इन्हें साहित्य आकादमी दवारा पुरस्कृत उपन्यास, विनायक से पडा है। इनके हर उपन्यास में वैश्वीकरण के प्रभाव का परिचय हमें मिलता है। उनका कहना है कि परिवार और व्यक्ति का अस्तित्व और बल (ज्ञान) समाज के कल्याण में निहित है।

डॉ. रमेशचन्द्र शाह और उनका रचना संसार, नामक विषय पर श्रीमती माया जोशी, ने अल्मोड़ा विश्वविद्यालय, से सन् 2015 में शोध कार्य प्रस्तुत किया।

कामराज विश्वविद्यालय – मदुरै, मद्रास विश्वविद्यालय –मद्रास, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा – चेन्नै, पांडिचेरी विश्वविद्यालय – पांडिचेरी, कालीकट विश्वविद्यालय – कालीकट, वारणासी विश्वविद्यालय – वारणासी, जबलपूर कालेज – जबलपूर, नागपूर विश्वविद्यालय – नागपूर, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय – कालडी।

जहाँ तक मेरी जानकारी है, उपरोक्त इन सभी विश्वविद्यालयों में किसी ने अभी तक रमेशचन्द्र शाह जी के उपन्यासों पर शोर्ध कार्य नहीं किया है। इसलिए मैंने इस विषय पर कार्य किया है।

यहाँ शाह जी के उपन्यासों को पढ़ते समय हमारा दृष्टिकोण भी विशेष रूप से बदल जाता है। अतः मैंने अपने शोध विषय के लिए "रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में वैश्वीकरण : एक अध्ययन" चुना। समय सीमा को ध्यान में रखते हुए उक्त शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में बॉटा है।

मैंने **प्रथम** अध्याय में उपन्यास की पृष्ठभूमि एवं हिन्दी उपन्यास में वैश्वीकरण पर चर्चा की है। इसमें उपन्यास के अर्थ, स्वरूप, तत्व एवं उसके प्रकार, प्रासंगिककाल में उपन्यास की आवश्यकता एवं महत्ता, वैश्वीकरण और हिन्दी उपन्यास को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया है।

दूसरे अध्याय में रमेशचन्द्र शाह जी के व्यक्तित्व, कृतित्व, उनकी रचनाएँ, सामाजिक मूल्यांकनः पुरस्कार एवं सम्मान और समकालिन हिन्दी साहित्य में रमेशचन्द्र शाह का योगदान का परिचय आदि के बारे में स्पष्टीकरण दिया है।

तीसरे अध्याय में वैश्वीकरण का अर्थ, स्वरूप, इतिहास, विशषताएँ, वैश्वीकरण के विभिन्न आयाम और सोपान, भूमंडलीकरण के विकास का क्रमिक चरण आदि के बारे में विशेष रूप विवरण दिया गया है।

चौथे अध्याय में शाह जी के उपन्यासों में संस्कृति और सामाजिक पक्ष के बारे में चर्चा की है और भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन, हर उपन्यासों में संस्कृति का प्रभाव कैसे है, और उससे सम्बंधित पात्रों का परिचय भी विस्तार रूप से दिया गया है।

पाँचवें अध्याय में रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में धार्मिक एवं ऐतिहासिक वर्णन कैसा है, धर्म और राजनीति, धर्म और मनुष्य का स्वभाव, भारत और विश्व धर्म में तुलना आदि के बारे में स्पष्टीकरण दिया गया है।

छठे अध्याय उपसंहार में भारतीय संस्कृति में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, और उन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है। वैश्वीकरण का प्रभाव भारत में कैसा है? इसलिए भविष्य में क्या–क्या बदलाव आ सकता है, और उसका समाधान भी दिया है।

मेरे पास शब्द भण्डार की कमी है, फिर भी प्रयास किया है। समय सीमा को ध्यान में रखते हुए जितना मैं कर पाई हूँ उसे आप जैसे विद्वानों के सामने रखने का साहस करती हूँ। मेरा यह प्रयास आपके आशीष को प्राप्त करेगी। यह उम्मीद है। इस उम्मीद के साथ, मेरे इस शोध कार्य में कोई त्रुटियॉ हुई हो तो उदार हृदय से क्षमा करें।